# मसूर की खेती कर अधिक लाभ कमायें किसानः डॉ अखिलेश

**कानपुर।** सीएसए के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि दलहनी फसलों में मसूर का अपना अलग एक महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर दाल जिसे लाल दाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि मसूर उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। उन्होंने बताया की मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.2 1 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन ,0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियासिन पाया जाता है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है इसके सेवन से अन्य दालों की अपेक्षा सर्वाधिक पौष्टिकता पाई जाती है।उन्होंने बताया कि रोगियों के लिए यह दाल अत्यंत लाभप्रद है। इसके सेवन से दस्त, बहुमूत्र, प्रदर, कब्ज व अनियमित पाचन क्रिया में लाभकारी है।

# उमाश
# जिलाध्य

**बस्ती**
यूनियन अ
अध्यक्ष ऋ
एनएसयूअ
को कांग्रेस
एनएसयूअ
संयोजन म
उमाशंकर
किया है।
उमाशंकर
प्रयास तेज
एनएसयूअ
पूर्व अध्यक्ष
ने कहा वि
कार्यक्रम
सक्रिय है।
में विवेक
मनीष, अ
उदयराम
अभिषेक,

# श्रीराम राज्याभिषेक के

**अमर भारती ब्यूरो**

# मसूर की वैज्ञानिक खेती कर अधिक लाभ कमायें किसानः डॉ. अखिलेश मिश्रा

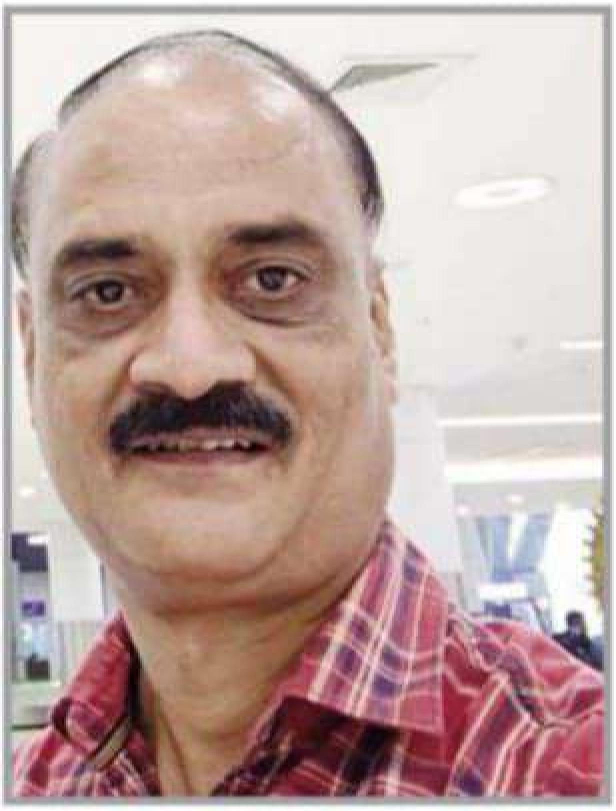

**कानपुर (नगर छाया समाचार)।** चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि दलहनी फसलों में मसूर का अपना अलग एक महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर दाल जिसे लाल दाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि मसूर उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। उन्होंने बताया की मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.2 1 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन ,0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियासिन पाया जाता है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है इसके सेवन से अन्य दालों की अपेक्षा सर्वाधिक पौष्टिकता पाई जाती है।उन्होंने बताया कि रोगियों के लिए यह दाल अत्यंत लाभप्रद है। इसके सेवन से दस्त, बहुमूत्र,प्रदर, कब्ज व अनियमित पाचन क्रिया में लाभकारी है। इसका हरा व सूखा चारा पशुओं के लिए स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है। शोध छात्र प्रसून सचान ने किसानों को सलाह दी है कि इसके इससे अधिक पैदावार के लिए अक्टूबर से मध्य नवंबर तक इसकी बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि मसूर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे- डीपीएल 15,डीपीएल 62, नूरी, के 75,आइपीएल 81, एलएस 218 प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि समय से बुवाई के लिए 30 से 35 किलोग्राम एवं देर से बुवाई के लिए 50 से 60 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। तथा उर्वरक 20 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में 25 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर की दर से दें। बुवाई के पूर्व बीज का शोधन अवश्य कर दें। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि किसान भाई आधुनिक तरीके से इस की उन्नत खेती करें तो दानों के उपज 20 से 25 कुंतल एवं भूसे की उपज 30 से 35 कु. प्रति हेक्टेयर ली जा सकती है।

**हिंदुस्तान 16/10/2024**

आदेश के [illegible] होंगे।

[illegible] की जा रही है।

## सीएसए : तनख्वाह देने की चल रही तैयारी

सीएसए के कर्मचारियों की दिवाली फीकी नहीं रहेगी। विवि प्रशासन ने 31 अक्तूबर दिवाली से पहले वेतन जारी करने की तैयारी कर ली है। विवि के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने बताया कि विवि में कुल 872 नियमित कर्मचारी और 82 संविदा कर्मचारी हैं। इनको दिवाली से पहले वेतन दिया जा सके, वित्त विभाग ने तैयारी शुरू कर दी है।

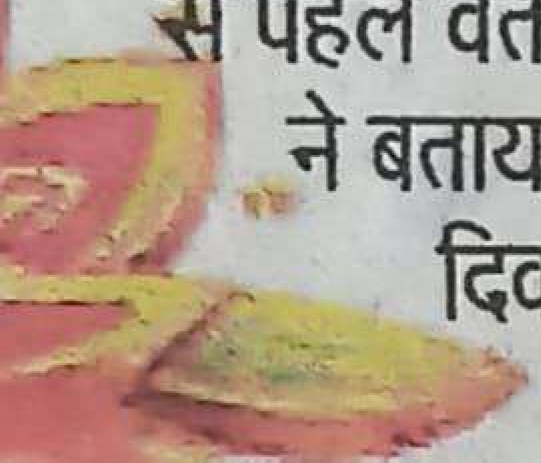

राष्ट्रीय सहारा

कानपुर • बुधवार • 16 अक्टूबर • 2024

# पूर की वैज्ञानिक खेती कर अधिक लाभ कमाएं कृषक : डॉ. अखिलेश

ुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रो. एवं दलहन वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश मिश्रा ने वताया कि दलहनी फसलों
र का अपना अलग एक महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर दाल को लाल दाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने वताया कि मसूर उत्पादन में भारत
श्व में दूसरा स्थान है। उन्होंने वताया की मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्वोहाइड्रेट, 3.2
शा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.21 मिलीग्राम राइवोफ्लेविन, 0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियासिन
ाता है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। इसके सेवन से अन्य दालों की अपेक्षा सर्वाधिक पौष्टिकता पाई जाती है। इसका सेवन
वहुमूत्र, प्रदर, कव्ज व अनियमित पाचन क्रिया में लाभकारी है। इसका हरा व सूखा चारा पशुओं के लिए पौष्टिक होता है। इस मौके पर
ात्र प्रसून सचान ने किसानों को सलाह दी है कि इसके अधिक पैदावार के लिए अक्टूबर से मध्य नवम्वर तक इसकी वुवाई करते हैं।

आज

# मसूर की वैज्ञानिक खेती कर अधिक लाभ उठायें किसान

कानपुर, 15 अक्टूबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि दलहनी फसलों में मसूर का अपना अलग एक महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर दाल जिसे लाल दाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि मसूर उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। उन्होंने बताया की मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.2 1 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन ,0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियासिन पाया जाता है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है इसके सेवन से अन्य दालों की अपेक्षा सर्वाधिक पौष्टिकता पाई जाती है।उन्होंने बताया कि रोगियों के लिए यह दाल अत्यंत लाभप्रद है। इसके सेवन से दस्त, बहुमूत्र,प्रदर, कब्ज व अनियमित पाचन क्रिया में लाभकारी है। इसका हरा व सूखा चारा पशुओं के लिए स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है। शोध छात्र प्रसून सचान ने किसानों को सलाह दी है कि इसके इससे अधिक पैदावार के लिए अक्टूबर से मध्य नवंबर तक इसकी बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि मसूर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे- डीपीएल 15,डीपीएल 62, नूरी, के 75,आइपीएल 81, एलएस 218 प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि समय से बुवाई के लिए 30 से 35 किलोग्राम एवं देर से बुवाई के लिए 50 से 60 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। तथा उर्वरक 20 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में 25 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर की दर से दें। बुवाई के पूर्व बीज का शोधन अवश्य कर दें।

सत्य का असर समाचार पत्र

Wednesday 16th October 2024 jksingh.hardoi@gmail.com website: ?????? ???? 9956834016

# मसूर की वैज्ञानिक खेती कर अधिक लाभ कमायें किसान:- डॉ अखिलेश मिश्रा

**पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल सत्य का असर समाचार पत्र**

**कानपुर** चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि दलहनी फसलों में मसूर का अपना अलग एक महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर दाल जिसे लाल दाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि मसूर उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। उन्होंने बताया की मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.2 1 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन ,0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियासिन पाया जाता है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है इसके सेवन से अन्य दालों की अपेक्षा सर्वाधिक पौष्टिकता पाई जाती है।उन्होंने बताया कि रोगियों के लिए यह दाल अत्यंत लाभप्रद है। इसके सेवन से दस्त, बहुमूत्र,प्रदर, कब्ज व अनियमित पाचन क्रिया में लाभकारी है। इसका हरा व सूखा चारा पशुओं के लिए स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है। शोध छात्र प्रसून सचान ने किसानों को सलाह दी है कि इसके इससे अधिक पैदावार के लिए अक्टूबर से मध्य नवंबर तक इसकी बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि मसूर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे- डीपीएल 15,डीपीएल 62, नूरी, के 75,आइपीएल 81, एलएस 218 प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि समय से बुवाई के लिए 30 से 35 किलोग्राम एवं देर से बुवाई के लिए 50 से 60 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। तथा उर्वरक 20 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में 25 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर की दर से दें। बुवाई के पूर्व बीज का शोधन अवश्य कर दें। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि किसान भाई आधुनिक तरीके से इस की उन्नत खेती करें तो दानों के उपज 20 से 25 कुंतल एवं भूसे की उपज 30 से 35 कु. प्रति हेक्टेयर ली जा सकती है।

मौसम
अधिकतम तापमान 33.c
27.c न्यूनतम तापमान
बाजार
सोना 73.840g
चांदी 87.000kg
सेंसेक्स 81,053.19

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
यूपी मैसेंजर
जनता की आवाज

04 हरियाणा ने दिखाया कांग्रेस को आईना, भाजपा की हुई ऐतिहासिक जीत
डिजाइना पंकज और निधि के

वर्ष :10 अंक :250 लखनऊ से प्रकाशित लखनऊ ,बुधवार 16 अक्टूबर 2024 पृष्ठ : 08

# मसूर की वैज्ञानिक खेती कर अधिक लाभ कमायें किसान:डॉ अखिलेश मिश्रा

**यूपी मैसेंजर संवादाता**

कानपुर , सीएसए के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि दलहनी फसलों में मसूर का अपना अलग एक महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर दाल जिसे लाल दाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि मसूर उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। उन्होंने बताया की मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाईड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.2 1 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन ,0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियासिन पाया जाता है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है इसके सेवन से अन्य दालों की अपेक्षा सर्वाधिक पौष्टिकता पाई जाती है।उन्होंने बताया कि रोगियों के लिए यह दाल अत्यंत लाभप्रद है।इसके सेवन से दस्त, बहुमूत्र,प्रदर, कब्ज व अनियमित पाचन क्रिया में लाभकारी है।इसका हरा व सूखा चारा पशुओं के लिए स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है। शोध छात्र प्रसून सचान ने किसानों को सलाह दी है कि इसके इससे अधिक पैदावार के लिए अक्टूबर से मध्य नवंबर तक इसकी बुवाई करते हैं।उन्होंने बताया कि मसूर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे- डीपीएल 15,डीपीएल 62, नूरी, के 75,आइपीएल 81, एलएस 218 प्रमुख हैं।उन्होंने बताया कि समय से बुवाई के लिए 30 से 35 किलोग्राम एवं देर से बुवाई के लिए 50 से 60 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है।तथा उर्वरक 20 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।